

कोरोना संक्रमण एवं सामाजिक परिवर्तन

डॉ. अंचल गुप्ता

प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)

गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद (उ०प्र०)

01

सारांश

कोरोना वायरस एक नवीन महामारी तथा नई अवधारणा होने के कारण इससे संबंधित जानकारी, पुस्तकें तथा साहित्य अत्यधिक सीमित है। उपलब्ध साहित्य तथा सामग्री का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके मुख्य लक्षण हैं। इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरतनी आवश्यक है। यह वायरस दिसंबर में सबसे पहले चीन में पकड़ में आया था। इसके बाद दूसरे देशों में अत्यधिक तीव्रता से प्रसारित हुआ। तमाम प्रयासों तथा प्रभावी वैक्सीन के बाद कोरोना तो लगभग समाप्त हो गया परन्तु अपने पार्श्व में समाज को प्रभावित करने वाले अनंत परिवर्तनों को छोड़ गया जिसका सिलसिला निरंतर चल रहा है।

परिचय

कोरोना वायरस चीन के वुहान शहर में उपजा एक ऐसा विषाणु है, जिसने अन्य स्तनधारियों व पक्षियों के अतिरिक्त मनुष्य के श्वसन तंत्र को भी संक्रमित किया संक्रमण के बढ़ते प्रकोप ने धीरे-धीरे वैश्विक महामारी का रूप धारण कर लिया। मानव से मानव में संक्रमण के प्रसार के कारण विश्व के अधिकांश देश इससे ग्रसित हो गये। जहां एक ओर संसार के करोड़ों लोग महामारी से संक्रमित हुए तथा करोड़ों काल के गाल में समा गए तो वहीं दूसरी ओर विश्व भर में कोरोना को मात देने वालों की संख्या भी अत्यधिक रही। यदि भारत की बात करें तो प्रारंभ में यहां कोरोना का संक्रमण बहुत कम था। यदि कहे कि विकसित और समृद्ध देशों की अपेक्षा यहां की स्थिति बहुत सामान्य थी तो गलत नहीं होगा, परंतु लॉकडाउन के दौरान व बाद में बहुत तेजी से संक्रमण फैला। यद्यपि यहां मृत्यु दर अन्य देशों की तुलना में काफी कम थी। बढ़ते संक्रमण को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा सरकार ने संक्रमण को रोकने के लिए देश भर में लॉकडाउन लगाने का निर्णय लिया। यदि कोरोना के स्रोत की बात करें तो कहने की आवश्यकता नहीं है कि इतना लंबा समय व्यतीत हो जाने पर भी सर्वथा इसका अभाव ही दिखाई देता है। विभिन्न देशों में अभी भी इसकी वैक्सीन के निर्माण तथा ट्रायल चल रहे हैं। भारत, चीन, अमेरिका तथा रूस सहित कई देशों ने केवल वैक्सीन का निर्माण तथा ट्रायल पूर्ण कर अपने देशवासियों को इसे उपलब्ध भी करा दिया। अन्य देश भी इस और तीव्रता से काम कर रहे हैं। यह सारे प्रयास होने पर भी कोरोना की समस्या से समाज अभी भी पूर्णतया छुटकारा प्राप्त नहीं कर सका यहां तक की वर्षों बीत जाने पर भारत सहित विभिन्न देशों ने न केवल संक्रमण की कई लहरों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण प्राप्त किया परंतु कोरोना की दूसरी लहर पूर्व की अपेक्षा अधिक भयंकर परिणाम लेकर आई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को समय रहते महामारी घोषित कर दिया, ताकि लोग इसे गंभीरता पूर्वक ले। कोरोना वायरस के आकार की बात करें तो यह बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस तथा मानव के बाल की तुलना में 100 गुना छोटा था लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनिया भर में तेजी से फैल रहा था।

कोरोना वायरस क्या है

कोरोना वायरस एक नवीन महामारी तथा नई अवधारणा होने के कारण इससे संबंधित जानकारी पुस्तकों तथा साहित्य अत्यधिक सीमित हैं। कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई। इस वायरस को इसके पूर्व कभी नहीं देखा गया। कोरोना वायरस का संक्रमण दिसंबर को चीन के वुहान से शुरू हुआ था फिर देखते ही देखते समस्त विश्व को इसने अपनी चपेट में ले लिया।

लक्षण

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके मुख्य लक्षण थे:-

- सूखी खांसी

- सांस लेने में कठिनाई
- अत्यधिक थकान जिसे थकावट कहा जाता है
- पाचन संबंधी लक्षण जैसे पेट खराब होना, उल्टी होना या पतला मल आना जिसे डायरिया कहा जाता है। सर दर्द और शरीर या मांसपेशियों में दर्द।
- बुखार या ठंड लगना
- सर्दी जैसे लक्षण जैसे नाक बंद होना नाक बहना या गले में खराश।

इस वायरस के प्रभाव से लोगों में केवल कुछ ही लक्षण हो सकते हैं, या कोई भी नहीं। जिन लोगों में कोई लक्षण नहीं होते हैं लेकिन उनका कोरोना टेस्ट पॉजिटिव आता है उन्हें एसिम्प्टोमेटिक कहा जाता था। उदाहरण के लिए सकारात्मक परीक्षण करने वाले कई बच्चों में कोरोना बीमारी के लक्षण नहीं होते थे। जिन लोगों में लक्षण दिखाई देते हैं उन्हें प्रीसिम्प्टोमेटिक माना जाता था। परंतु दोनों समूह अभी भी दूसरों में कोरोना फैला सकते थे। इसके संक्रमण के फल स्वरूप बुखार, जुखाम, सांस, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्या उत्पन्न हुई। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से फैला। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरतनी आवश्यक थी। सूत्रों के अनुसार यह वायरस दिसंबर में सबसे पहले चीन में पकड़ में आया था। इसके बाद देखते ही देखते हैं अनेक देशों में अत्यधिक तीव्रता से फैलता गया। कोरोना से मिलते जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंद के जरिए तीव्रता से प्रसारित होने लगा। कोरोना वायरस व कोरोना नाम का यह वायरस 80 से ज्यादा देशों में फैल चुका था। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत थी, ताकि इसे फैलने से रोक जा सके। इस वायरस की वजह से अनेक बीमारी एवं शारीरिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था जैसे – पहले बुखार होता था इसके बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती थी। कहना न होगा कि इन लक्षणों का हमेशा अर्थ यह नहीं था कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। क्योंकि इस संक्रमण को गंभीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक की मौतें भी हो गई थी। वृद्ध एवम् बच्चों को इसने बहुत अधिक प्रभावित किया था। विशेषतौर पर बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या दिल की बीमारी थी उनके मामले में खतरा गंभीर हो गया था। यह वायरस निकट संपर्क लगभग 6 फीट या 2 मीटर वाले लोगों में सबसे आसानी से फैला था। जब बीमारी से ग्रस्त कोई व्यक्ति खांसता था या छींकता, गाता बात करता या फिर सांस लेता तो बूंद और बहुत छोटे कण हवा में फैल जाते थे। यदि आप इन बूंद या कणों को सांस के जरिए अंदर लेते तो यह उनकी आंखों में चले जाते थे तो वह बीमारी की चपेट में आ सकते थे तथा कुछ मामलों में कोरोना हवा के माध्यम से फैला और 6 फीट से अधिक दूरी के लोगों को संक्रमित कर सकता था छोटी बूंदों और कण हवा में मिनट से लेकर घंटों तक रह सकते थे। इस प्रसारण को हवाई संचरण भी कहा गया। यह विशेष रूप से बंद स्थान में अधिक पाया गया, आमतौर पर यदि वायरस वाली सतह को स्पर्श करते ही और उसके बाद अपनी आंखों, नाक, मुंह या चेहरे को स्पर्श करते ही बीमारी प्रसारित हो जाती थी। लेकिन ऐसा माना जाता था कि यह वायरस फैलने का बहुत आम तरीका पाया गया। वायरस के संकट ने समाज में बड़े पैमाने पर संकट पैदा कर दिया था। माहामारी के इस संकट ने लोगों की आजीविका, कार्य और सामाजिक मेल-जोल में विपरीत परिवर्तन ला दिया था। जिसकी वजह से देश में लाखों लोग घरों में ही ऑनलाइन डिलीवरी का काम कर रहे थे। इस समय देश में काम काज ठप्प हो जाने के कारण हजारों लोग सड़कों पर भी आ गए थे। इस अनजाने संकट से निजात पाने के लिए सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन लगाने की घोषणा की थी। 2020 में भारत में कोरोना वायरस को रोकने के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने 24 मार्च को पूरे देश को लॉकडाउन लगाने का आदेश दिया। इस निर्णय से पहले 22 मार्च को 14 घंटे के लिए जनता कर्फ्यू लगाया गया था। प्रधानमंत्री ने देश को संबोधित करते हुए लॉकडाउन की अवधि को आगे बढ़ाकर 3 मई करने का फैसला लिया। उन्होंने यह भी संभावना जताई कि आने वाले समय के नियम और भी सख्त होंगे। साथ ही प्रधानमंत्री ने यह भी आश्वासन दिया कि जहां नए मामले सामने नहीं आएंगे वहां छूट दी जाएगी। 30 मई को देशभर में लॉकडाउन के पाचवें चरण की घोषणा की गई थी और फिर इसी तरह लॉकडाउन का सिलसिला कोरोना वायरस की अधिकांश समाप्ति तक जारी रहा। इस कर्फ्यू के दौरान प्रशासन द्वारा सभी को घर में रहने के लिए कहा गया था। उन्होंने सावधानी के तौर पर लोगों से स्वास्थ्य प्रणाली पर बोझ को कम करने के लिए नियमित जांच और वैकल्पिक सर्जरी से बचने के लिए भी कहा था।

संक्रमण की गंभीरता

कोरोना माहामारी की त्रासदी को पूरा विश्व झेल रहा था। जिसका प्रारंभ चीन के वुहान शहर से दिसंबर 2019 में हुआ था। निमोनिया, वायरस तथा इन्फ्लूएंजा जैसे लक्षणों से ग्रसित व संक्रमित यह देश जब तक त्रासदी को समझ पाता तब तक समूचे विश्व को इसने अपनी चपेट में लेना प्रारंभ कर दिया था। विश्व के आर्थिक तथा चिकित्सा सुविधाओं से संपन्न शक्तिशाली एवं विकसित देश भी इस अदृश्य दुश्मन से लड़ने में असमर्थता का अनुभव कर रहे थे। इस माहामारी का प्रसार बिना किसी भेदभाव के हर शहर, गांव जिले प्रदेश एवं देश से दूसरे देश विस्तार पा रहा था। निरंतर प्रसारित खबरों, एजेंसीयों तथा समाचार पत्रों के सर्वेक्षणों से ज्ञात हो रहा था कि अब तक विश्व भर के लगभग तीन लाख लोग कोरोना के संक्रमण के कारण मृत्यु का ग्रास बन चुके थे। देखते ही देखते इस भयानक एवं अदृश्य दुश्मन ने दक्षिण कोरिया, मकाऊ, ईरान संयुक्त राज्य अमेरिका सहित तमाम देशों को अपनी चपेट में ले लिया था। भारत भी इसका अपवाद नहीं था। यह अलग बात थी कि सरकार के द्वारा तथा समय से किए गए यथोचित प्रयासों, लॉकडाउन जैसे नियमों का कड़ाई से पालन करने के कारण तुलनात्मक रूप से भारत कम पीड़ित था कहने की आवश्यकता नहीं कि इस वायरस

की रोकथाम, इलाज की सही जानकारी का भी कोई अता-पता नहीं था और ना ही तमाम प्रयासों के बावजूद कोई देश इसकी वैक्सीन तयार कर पा रहा था। कहने की आवश्यकता नहीं थी कि इसका टीका न केवल भारत बन चुका था, अपितु अधिकांश देशों को भी उपलब्ध करा दिया गया था। परंतु वर्तमान समय में कोरोना का इलाज व रोकथाम के द्वारा समाज में बहुत सारे परिवर्तन आए, जिनको भविष्य में सामाजिक परिवर्तन के रूप में जाना जाएगा। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भी उन प्रभावों को ज्ञात करना है जो कोरोना काल के दौरान तथा पश्चात समाज में विभिन्न रूपों में परिलक्षित हो रहे हैं। कोरोना के नकारात्मक प्रभाव केवल स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं है अपितु सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और सबसे प्रमुख आर्थिक प्रभाव लंबे समय तक समाज में परिलक्षित होते रहेंगे।

कोरोना पर साहित्य की उपलब्धता

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक समस्याओं के साथ समाज परिवर्तन को भी जन्म दिया है। यूं तो यह विषय अत्यधिक नवीन ही परंतु अनेक समाजशास्त्र के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के द्वारा इस विषय पर अनेक सर्वेक्षण, शोध पत्र एवं पुस्तकें लिखी गई एवं लिखी जा रही हैं। यह महामारी क्योंकि अधिक पुरानी नहीं है इसलिए पुस्तकालय एवं विद्यालयों में इससे संबंधित अधिक साहित्य एवं पाठ्य सामग्री उपलब्ध नहीं है। इसलिए प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा कोरोना के समाजशास्त्र के क्षेत्र में अल्प जागरूकता तथा लघु योगदान देने का प्रयास किया है। शोध की इस शाखा में यूं तो शोध कार्यों का प्रायः अभाव ही है परंतु कुछ शोध कार्य एवं लेख उदाहरण के योग्य हैं जिनमें:

1. **अंचल गुप्ता (2020):**— ने अपनी पुस्तक "कोरोना का सामाजिक व आर्थिक भूगोल" में कोरोना की उपज बचाव तथा सुरक्षा के उपायों पर प्रकाश डालने के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षण तथा वर्क फ्रॉम होम के लाभ तथा हानि पर प्रकाश डाला है।
2. **जाधव टी आर (2023):**— ने अपनी पुस्तक "कोविड की आंधी" में कोविड के अंतरराष्ट्रीय प्रसार, परेशानियां तथा इस महामारी के द्वारा प्रसारित मौत के खेल के द्वारा परिवारों के उजड़ने की दास्तान को बयां किया है।
3. **कैलाश सत्यार्थी (2021):**— ने अपनी पुस्तक "कोविड एवं सभ्यता का संकट और समाधान" में कोरोना महामारी से उपजे जैसे करुणा, कृतज्ञता, उत्तरदायित्व तथा सहिष्णुता जैसे स्थाई समाधानों पर प्रकाश डाला है।
4. **महेश शर्मा (2020):**— ने अपनी पुस्तक "कोरोना के बारे में जानिए" में कोरोना वायरस की जानकारी, लक्षण, प्रसार तथा बचाव के उपायों के बारे में जानकारी दी है।
5. **रूपक श्रीवास्तव (2024):**— ने अपनी पुस्तक "कोरोना व विकास की ज्योति" में कोरोना काल में केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा लोगों को दी गई सहायता आर्थिक एवं सहयोग के साथ-साथ आर्थिक समीक्षा पर भी प्रकाश डाला है।
6. **आर के सिन्हा (2023):**— ने अपनी पुस्तक "कोरोना का प्रलय काल" में कोरोना काल का वर्णन किया है जिसमें इससे मुक्ति के उपायों की चर्चा भी की गई है।
7. **संगीता पुरी (2020):**— "मेरी कोरोना डायरी में" कोरोना महामारी के समय सरकार के द्वारा लॉकडाउन की घोषणा से अस्त-व्यस्त हुए देश तथा पटरी से उतरी अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डाला है।

अध्यक्ष विषय का महत्व

कोरोना एक ऐसी बीमारी है जिसको विश्व स्वास्थ्य संगठन महामारी घोषित कर चुका है। यह एक ऐसी बीमारी है जिसमें इलाज से बेहतर बचाव है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस विषय का चयन इसलिए भी किया गया है ताकि इस प्रकार के अध्ययन के द्वारा समाज को जागरूक किया जा सके। इस महामारी से निपटने के लिए हमें स्वयं योजना तैयार करने की बहुत जरूरत है। इस महामारी पर आपके परिवार या विश्वसनीय दोस्तों के साथ जितनी चर्चा एवं बातचीत की जाएगी उतनी ही जागरूकता बढ़ेगी। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह बीमारी तमाम सावधानियों के बाद हर बार नवीन रूप में सामने आती है। इसके बारे में हमें जितना अधिक ज्ञान होगा उतना ही खतरा कम होगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस विषय का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में कोरोना महामारी की उत्पत्ति प्रसार तथा स्वयं को अलग-अलग करके और शारीरिक दूरी बनाए रखने के बारे में के प्रकाश डाला गया है। साथ ही इससे होने वाले परिवर्तनों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इस सब के बारे में जानने, समझने तथा विमर्श से महामारी के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी।

शोध पद्धति

शोध संबंधी तथ्य एवं जानकारी के लिए एकत्रीकरण के लिए द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है। इस संबंध में कहने की आवश्यकता नहीं है कि जो आंकड़े किसी प्रकाशित अथवा अप्रकाशित साधनो या स्रोतो जैसे –सरकारी, अर्धसरकारी, अंतरराष्ट्रीय, निजी प्रकाशन, समाचार पत्र, गैर सरकारी प्रलेखों द्वारा एकत्र किए जाते हैं, उन्हें द्वितीयक स्रोत कहते हैं। इस प्रकार जो आंकड़े प्रथम बार व्यक्तिगत रूप से अथवा व्यक्तियों के समूह संस्था/संगठन द्वारा एकत्रित किए जाते हैं वे आंकड़ों के प्राथमिक स्रोत कहलाते हैं, दूसरी तरफ जो आंकड़े किसी प्रकाशित अथवा अप्रकाशित साधनों द्वारा एकत्र किए जाते हैं, द्वितीयक स्रोत कहलाते हैं। द्वितीयक स्रोत आमतौर पर घटनाओं या अवधि के अध्ययन के बाद बनाए जाते हैं।

द्वितीयक स्रोतों के उदाहरणों में पत्र डायरी, फोटो मौखिक इतिहास, समाचार पत्र या जनरल लेख और संस्मरण या आत्मकथाएँ आदि शामिल होती हैं। प्रस्तुत परियोजना में भी इन्हीं माध्यमों से कोरोना संबंधी तथ्य तथा जानकारी एकत्र की गई है। शोध पत्र के अंत में तत्वों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

उपकल्पनाएं

शोध पत्र लेखन के पूर्व संबंधित पुस्तकों, लेखों तथा अपने अनुभवों के आधार पर जो उपकल्पनाएं निर्मित की हैं वे इस प्रकार हैं।

- कोरोना वायरस की शुरुआत चीन के वुहान शहर से हुई थी ।
- कोरोना वायरस व्यक्ति से व्यक्ति में फैलने वाला संक्रमण है।
- इसका संक्रमण व्यक्ति के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करता है।
- वैक्सीन ने कोरोना के प्रसार एवं प्रभाव को रोकने में मदद की।
- कोरोना काल में सहयोग, परोपकार तथा साझी सोच को बढ़ावा दिया।
- इस महामारी ने अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ परिवर्तनों को भी जन्म दिया है।
- कोरोनावायरस के प्रसार को रोकने में लॉकडाउन ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की

विश्लेषण एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र से जुड़े तथ्यों के निष्कर्ष तथा संबंधित साहित्य के अध्ययन के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि कोरोना चीन के वुहान शहर से उपजा एक संक्रमण है। इसके लक्षण तो सामान्य बुखार जुकाम के समान हैं, परंतु यदि ध्यानपूर्वक सावधानी से इसके उचित इलाज एवं रोकथाम ना की जाए तो इसका गंभीर संक्रमण फेफड़ों पर बुरा असर डालकर मृत्यु के कगार पर पहुंचा सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि सरकार के द्वारा सही समय पर लॉकडाउन लगाने का निर्णय लेकर संक्रमण के प्रसार को कम कर दिया गया। इसके अतिरिक्त सभी देशवासियों को कोरोना का टीका समय पर उपलब्ध कराकर इस महामारी की रोकथाम का सफल प्रयास किया। कहना न होगा कि इस महामारी के कारण बहुत से लोगों की जान चली गई। ये सभी उपाय एवं रोकथाम के बावजूद यह महामारी आज भी खतरा बनकर मंडरा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि प्रतिपल हमें इससे सावधान रहने की आवश्यकता है। इसके लिए भीड़ वाले स्थान पर मास्क पहन कर जाएं एवं दूसरों से दो गज दूरी बनाए रखें। बाहर से आकर अपने हाथ को साबुन से धोएं। घर के बाहर कुछ खाने के पूर्व हाथ धोने के लिए साबुन उपलब्ध नहीं है, तो 60% अल्कोहल वाले हैंड सेनीटाइजर का प्रयोग करें। भीड़ भाड़ वाले स्थानों से बचें। जितना संभव हो सके बाहरी ताजा हवा अंदर लाने के लिए खिड़कियां खोलें। इन सब बातों को ध्यान रख कर हम किसी हद तक इस संक्रमण से बचाव कर सकते हैं। इस दौरान लोगों ने विशेष तौर पर महिलाओं ने नए शौक, नए व्यंजन और सोचने के नए तरीके अपनाए। कुछ लोगों ने अपने दोस्तों के साथ कम और अपने परिवार के साथ ज्यादा समय बिताया। नई और व्यापक रूप से उपलब्ध तकनीक ने लोगों को जोड़े रखा। विशेषतया घर के बुजुर्गों ने कोरोना तथा लॉकडाउन का आनंद लिया क्योंकि घर के अति व्यस्त रहने वाले परिजनों ने उनके साथ एवं पास समय व्यतीत किया। तमाम निराशाजनक परिदृश्य के बावजूद कोरोना महामारी के कुछ सकारात्मक पहलू भी सामने आते हैं। जैसे लॉकडाउन के दौरान भारत में यातायात रुक जाने से साफ आसमान एवं स्वच्छ हवा दिखाई दी। यातायात एवं वाहनों की आवाजाही रुक जाने से सड़क दुर्घटना का ग्राफ नीचे आ गया। ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखकर पढ़ाई की एक नवीन विधा से परिचय हुआ, साथ ही वर्क फ्रॉम होम की शैली ने न केवल कार्य को सरल बनाया अपितु लोग अपने परिवार के साथ अभी तक रह रहे हैं। उपरोक्त सभी पक्षों के बावजूद हमें अभी भी कोरोना से सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि बचाव इलाज से सदैव बेहतर होता है।

1. अपने शरीर एवं स्वास्थ्य का सदैव ध्यान रखें।
2. नियमित व्यायाम और खान-पान का ध्यान रखें।
3. भीड़-भाड़ वाले इलाकों में सदैव मास्क का प्रयोग करें।
4. जुकाम बुखार शीघ्र ठीक ना हो तो तुरंत कोरोना टेस्ट करायें।
5. सांस की तकलीफ होने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें।
6. न केवल स्वयं सतर्क रहें अपितु आसपास वालों को भी सजग करें।
7. इस प्रकार की मुसीबत के समय परोपकार को वरीयता प्रदान करें।

इस शोध पत्र में कोरोना के कारण एवं इसके दीर्घकालिक प्रभावों पर ध्यान केंद्रित रखने का प्रयास किया गया है। महामारी के कई प्रभाव उन कारकों की ओर दृढ़ता से इशारा करते हैं जो इस संक्रमण के पूर्व थे और आगे भी रहेंगे। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार की महामारियाँ जितनी शारीरिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संबंधी समस्याएं लेकर आती हैं उतनी ही सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ भी। इस निष्कर्ष एवम् विश्लेषण में हम कोरोना महामारी के समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव को जानने एवम् समझने का प्रयास करेंगे, जो उपरोक्त प्रभावों, जोखिमों, चुनौतियों और अवसरों के विश्लेषण से उत्पन्न होते हैं। सामाजिक दीर्घकालिक प्रभाव के ये महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

महामारी के दौरान स्थानीय समुदायों का महत्व पूर्व की अपेक्षा अत्यधिक बढ़ा देता है। ये समुदाय महामारी के दौरान पूर्व की अपेक्षा बहुत अधिक क्रियाशील एवम् महत्वपूर्ण हो गए थे। कहना न होगा कि स्थानीय, धर्मार्थ एवं स्वैच्छिक संगठनों ने कोविड-19 से निपटने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यद्यपि सामुदायिक बुनियादी ढाँचे की मजबूती के आधार पर समुदायों के बीच असमानताएँ भी हैं। परिवर्तित परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करने की राष्ट्रीय क्षमता के लिए स्थानीय स्तर पर समुदायों के

मध्य एक सशक्त नेटवर्क और सामुदायिक सहभागिता को बनाए रखने के प्रयासों की आवश्यकता है ताकि इस प्रकार के किसी भी कठिन समय से हम सरलता से बाहर आ सकें।

बढ़ती भौगोलिक असमानताएँ भी संकट को विस्तार देती हैं स्वास्थ्य और कल्याण, स्थानीय आर्थिक जोखिम और लचीलापन, गरीबी और अभाव तथा प्रतिक्रिया योजना सहित इन सभी का एक महत्वपूर्ण आयाम है जिसने संकट के प्रभाव को आकार दिया है। इन असमानताओं की ओर ध्यान देना आवश्यक है। ये असमानताएँ उन तरीकों को उजागर करती हैं जिनसे भौगोलिक स्थिति, भौतिक बुनियादी ढाँचे और सामाजिक परिस्थितियों का संयोजन यह दर्शाता है कि भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न प्राथमिकताओं की आवश्यकता हो सकती है।

बढ़ी हुई संरचनात्मक असमानताओं ने भी कोविड-19 और इसके प्रति सरकार की प्रतिक्रिया ने अलग-अलग लोगों को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित किया है। जिससे अक्सर आय और गरीबी में मौजूदा संरचनात्मक असमानताएँ, शिक्षा और कौशल में सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, और पीढ़ियों के बीच असमानताएँ और बढ़ गई हैं। समाज एवं सामाजिक विकास, रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े प्रभाव भी हैं जो लोगों को भिन्न भिन्न तरीकों से प्रभावित कर रहे हैं।

मानसिक स्वास्थ्य के महत्व के बारे में अधिक जागरूकता का प्रसार हुआ है परंतु महामारी और उससे निपटने के लिए उठाए गए विभिन्न उपायों के परिणामस्वरूप मानसिक स्वास्थ्य के परिणाम भी अलग-अलग रहे हैं। बच्चों और युवाओं के लिए सेवाओं के अलावा, नए मामलों और पहले से मौजूद बीमारियों से पीड़ित लोगों के लिए सहायता की पहुँच भी बाधित हुई है। समाज में मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के कारणों और समाधानों पर नए सिरे से ध्यान देने की अत्यंत आवश्यकता है, जिसमें असमानता के संरचनात्मक और मूल कारणों को खोज कर दूर करना भी शामिल है, अन्यथा दोनों ही स्थितियों के कुछ विशेष समूहों के मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ने की संभावना है।

कोरोना के बाद बढ़ती बेरोजगारी और बदलते श्रम बाजार की ओर ध्यान देने की जरूरत है। आंकड़े बताते हैं कि रोजगार और घरेलू आय के स्तर में गिरावट आई है और यदि इस ओर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया तो निकट भविष्य में यह और भी बढ़ने की संभावना है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक सुरक्षा पर निर्भरता बढ़ेगी, जिससे निपटने के लिए हमारी उपलब्ध वर्तमान व्यवस्था पूर्ण सक्षम नहीं है। यह न केवल उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण होगा जो राज्य की सामाजिक सुरक्षा सहायता पर निर्भर हैं बल्कि इसलिए भी कि माँग के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण समायोजन की आवश्यकता हो सकती है।

सकारात्मक परिणाम की बात करें तो कोरोना ने ऑनलाइन शिक्षण तथा वर्क फ्राम होम जैसी व्यवस्था ने डिजिटल क्रांति को समय से पूर्व ला दिया है। यद्यपि ये सब पहले भी हमारे समाज में थे परंतु उतने प्रचलित नहीं थे।

यह शोध पत्र महामारी के सामाजिक प्रभाव पर विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त साक्ष्यों को एकत्रित करने के साथ साथ यह दर्शाता है कि कोविड-19 ने कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव उत्पन्न किए हैं। इस महामारी के सकारात्मक एवं नकारात्मक सहित मिले जुले प्रभाव देखने को मिलते हैं। जहां कोरोना ने एक ओर कुछ मौजूदा समस्याओं में वृद्धि की वहीं दूसरी ओर इसने शक्ति, लचीलेपन, रचनात्मकता और नवाचार के क्षेत्रों को भी उजागर किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह शोध पत्र समाज के नीति निर्माताओं, नागरिक समाज, मीडिया और अन्य लोगों के लिए एक उपयोगी संसाधन साबित होगा जो कोरोना के उपरांत बदलते परिदृश्य को समझने का प्रयास कर रहे।

संदर्भ:-

1. अंचल गुप्ता 2020: "कोरोना का सामाजिक आर्थिक भूगोल", अनु बुक्स प्रकाशन मेरठ
2. गुडे एवं हॉट 1952: "मैथर्ड इन सोशल रिसर्च" मेकग्रा हिल बुक कंपनी न्यूयॉर्क।
3. जॉर्ज विलियम 1938: "द साइंटिस्ट इन एक्शन" साइंटिफिक बुक क्लब।
4. जॉर्ज लैंड बग 1979: "सोशल एंड रिसर्च लॉन्ग" मांस ग्रीन एंड कंपनी।
5. जाधव टी० आर० 2023: "कोविड की आंधी" विंग्स प्रकाशन।
6. कैलाश सत्यार्थी 2021: "कोविड -19 सभ्यता का संकट और समाधान" प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
7. कोहने और नागले 1934: "ए इंट्रोडक्शन तो लॉजिक एंड साइंटिफिक मेथड"।
8. कपिल एच० के० 1985: "अनुसंधान विधियां" भार्गव प्रकाशन आगरा।
9. महेश शर्मा 2020: "कोरोना वायरस के बारे में जानिये" प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
10. पी०वी० यंग 1960: "साइंटिफिक सोशल एंड रिसर्च" एशिया पब्लिकेशन हाउस बॉम्बे।
11. आर०के० सिंह 2023: "कोरोना का प्रलय काल" प्रकाशक प्रभाव प्रकाशन नई दिल्ली।
12. रूपक श्रीवास्तव 2024: "कोरोना व विकास की ज्योति" शासन प्रकाशक।
13. संगीता पुरी 2020: "मेरी कोरोना डायरी" ऑनलाइन पुस्तक।